दिनांक : .....

(आश्रम अथवा समिति का नाम)

.....

.....

प्रति,

माननीय श्री .....

जिलाधिकारी, **.....**

विषय : विद्यालयों-महाविद्यालयों में 'श्रीमद्भगवद्गीता' को पाठ्यक्रम में जोड़कर विद्यार्थियों को लाभान्वित करने हेतु माननीय भारत सरकार को ज्ञापन।

माननीय महोदय,

वंदे मातरम्...

कुरुक्षेत्र के मैदान में भगवान श्रीकृष्ण के श्रीमुख से निकला वेद और उपनिषदों का सार 'श्रीमद्भगवद्गीता' का ज्ञान आज भी मनुष्यमात्र का पथप्रदर्शन कर रहा है। केवल गीता ही एकमात्र ऐसा ग्रंथ है जिसकी जयंती व्यापक रूप से विश्वभर में मनायी जाती है। विश्व की ५७८ भाषाओं में गीता का अनुवाद किया गया है। 'श्रीमद्भगवद्गीता' केवल हिन्दुओं के लिए या भारतवासियों के लिए ही नहीं अपितु विश्वमानव के लिए कल्याणकारी व उपयोगी है। 'श्रीमद्भगवद्गीता' दार्शनिक के दर्शन, वैज्ञानिक के लिए विज्ञान, नीतिज्ञ के लिए नीति, तथा साधक के लिए साधना का मार्ग प्रशस्त करती है। इसमें कर्मयोग, भक्तियोग, ज्ञानयोग - तीनों का सुंदर समन्वय है। यह एक जीवन ग्रंथ है जिसमें मानव-जीवन की सभी समस्याओं का समाधान मिलता है।

समाज में फैल रहे वैचारिक प्रदूषण को दूर करने में गीता अहम भूमिका निभा सकती है। गीता-पाठ से मन-बुद्धि-विचार शुद्ध होने लगते हैं। भगवद्गीता के ज्ञान को अपनाने से विद्यार्थियों में कर्तव्यपालन, समता, उद्यम, साहस, धैर्य जैसे गुणों का विकास होता है। आज जबकि विद्यार्थियों में भय, चिंता, अवसाद आदि बढ़ रहे हैं और विद्यार्थी दिशाहीन हो रहे हैं ऐसे में गीता का ज्ञान उन्हें निर्भय, प्रसन्न और विवेकवान बनायेगा तथा सही दिशा देगा।

आज कई देश गीता-ज्ञान को अपनाकर अपने-आपको उन्नत महसूस कर रहे हैं। मैनेजमेंट सिखानेवाली कई विदेशी संस्थाएँ अपने पाठ्यक्रम में 'श्रीमद्भगवद्गीता' को शामिल कर रही हैं। न्यूजर्सी की सेटन हॉल यूनिवर्सिटी में तो गीता पाठ को अनिवार्य विषय घोषित किया गया है। देश-विदेश के अनेकानेक महापुरुषों, विद्वानों एवं तत्त्वचिंतकों ने भी गीता को उत्कृष्ट ग्रंथ घोषित किया है। इस ग्रंथ का लाभ सभी धर्म के लोगों ने लिया है तथा ले रहे हैं, इसे भारत का राष्ट्रीय धर्मग्रंथ बनाया जाय तो यह देशवासियों का सौभाग्य होगा।

हाल ही में माननीय सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री ए.आर. दवे ने पहली कक्षा से ही विद्यालयों में गीता को अनिवार्य करने की बात कहते हुए कहा था कि ''यही वह तरीका है जिससे जीवन जीना सीखा जा सकता है।''

इसके पहले ३० अगस्त २००७ को इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने भी इस बारे में कहा था कि 'भगवद्गीता सभी धर्मों की निचोड़ है और इसने हमारे स्वतंत्रता संग्राम में भी प्रेरक की भूमिका निभायी है। इसलिए ऐसे ग्रंथ को राष्ट्रीय धर्मशास्त्र की मान्यता दी जानी चाहिए।' इसके लिए मा. उच्च न्यायालय ने संविधान के अनुच्छेद ५१ (ए), (बी) व (एफ) का हवाला दिया, जिनमें राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रगान, राष्ट्रीय पक्षी और राष्ट्रपुष्प का प्रावधान है। अदालत ने कहा कि 'हर नागरिक का कर्तव्य है कि वह 'भगवद्गीता' के आदर्शों पर अमल करे और धरोहरों की रक्षा करे। यह ग्रंथ किसी खास सम्प्रदाय का नहीं बल्कि सभी सम्प्रदायों की 'मार्गदर्शक शक्ति' और भारत का धर्मशास्त्र है।'

अतः गीता-ज्ञान के प्रचार-प्रसार हेतु पूज्य संत श्री आशारामजी बापू पिछले ५० वर्षों से अपने सत्संगों के माध्यम से गीता के ज्ञान का प्रचार-प्रसार सतत करते रहे हैं। बापूजी के गीता-भागवत सत्संग समारोहों में गीता-ज्ञान की विशेष प्रधानता रही है। पूज्य बापूजी की प्रेरणा से आश्रम के वक्ताओं एवं साधकगणों द्वारा गीता की महिमा समाज तक पहुँचायी जाती रही है। ऋषि प्रसाद पत्रिका व लोक कल्याण सेतु समाचार पत्र द्वारा गीता के ज्ञान का प्रचार-प्रसार लगातार किया जाता रहा है। आश्रम द्वारा लाखों की संख्या में श्रीमद्भगवद्गीता की पुस्तकों का वितरण किया गया है। बापूजी के साधकों द्वारा पिछले कई वर्षों से गीता जयंती पर गीता जागृति यात्राओं का आयोजन, गीता वितरण आदि बड़े स्तर पर किया जाता रहा है। इस वर्ष भी देशभर में यह कार्यक्रम किये जा रहे हैं।

..... (समिति/आश्रम का नाम) आपश्री के माध्यम से केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकारों से अनुरोध करता है कि गीता को प्रत्येक विद्यालय-महाविद्यालय के पाठ्यक्रम में जोड़कर एक विषय के रूप में पढ़ाया जाय ताकि विद्यार्थियों का नैतिक, भौतिक, आध्यात्मिक विकास हो और भारतीय आध्यात्मिक ज्ञान से सुसज्ज विद्यार्थी विश्व का सही मार्गदर्शन करें।

सादर धन्यवाद !

प्रार्थी

.....

.....

श्रीमद्भगवद्गीता : एक सर्वमान्य धर्मशास्त्र

श्रीमद्भगवद्गीता पर महापुरुषों व विद्वानों के विचार

इस ग्रंथ में सब देशों, जातियों, पंथों के तमाम मनुष्यों के कल्याण की अलौकिक सामग्री भरी हुई है। अतः हम सबको गीताज्ञान में अवगाहन करना चाहिए। भोग, मोक्ष, निर्लेपता, निर्भयता आदि तमाम दिव्य गुणों का विकास करनेवाला यह गीताग्रंथ विश्व में अद्वितीय है।

– पूज्यपाद स्वामी श्री लीलाशाहजी महाराज

जो अपने आप श्रीविष्णु भगवान के मुखकमल से निकली हुई है वह गीता अच्छी तरह कंठस्थ करना चाहिए। अन्य शास्त्रों के विस्तार से क्या लाभ ? **– महर्षि व्यासजी**

गीता पापनाशिनी एवं ज्ञान बढ़ानेवाली है। गीता हारे हुए को हिम्मत और हिम्मतवान में सद्गुण भरती है। आज के चिंताग्रस्त, अशांत मानव को गीता के ज्ञान की अत्यंत आवश्यकता है। अतः मानवता का कल्याण चाहनेवाले पवित्रात्माओं को गीता-ज्ञान घर-घर तक पहुँचाने में लगना चाहिए। **– पूज्य संत श्री आशारामजी बापू**

'श्रीमद् भगवद्गीता' उपनिषदरूपी बगीचों में से चुने हुए आध्यात्मिक सत्यरूपी पुष्पों से गुँथा हुआ पुष्पगुच्छ है। **– स्वामी विवेकानंद**

''मेरे विचार से गीता ने हमें जो शिक्षा दी है और जो पाठ पढ़ाया है, उससे ऊँची और कोई शिक्षा या निर्देश हो, यह मुझे संभव नहीं जान पड़ता।

– भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री

''मैं तो चाहता हूँ 'गीता' न केवल राष्ट्रीय शालाओं में ही बल्कि प्रत्येक शिक्षासंस्था में पढ़ायी जाय। एक हिन्दू बालक या बालिका के लिए 'गीता' का न जानना शर्म की बात होनी चाहिए। यह सच है कि 'गीता' विश्वधर्म की एक पुस्तक है।'' **– महात्मा गांधीजी**

''विश्वधर्म के मौलिक प्राण-तत्त्वों का जितना सुन्दर समावेश 'गीता' में है उतना किसी भी अन्य धर्म के किसी भी धर्मग्रंथ में नहीं है।''

– पारसी विद्वान प्रो. फिरोज कावसजी दावर

''गीता-वक्ता भगवान श्रीकृष्ण का उपदेश केवल आर्यजाति के लिए नहीं है बल्कि समस्त भूत-प्राणियों के लिए है।'' **– डॉ. मुहम्मद हाफिज सैय्यद**

''गीता के साथ तुलना करने पर जगत का आधुनिक समस्त ज्ञान मुझे तुच्छ लगता है। मैं नित्य प्रातःकाल अपने हृदय और बुद्धि को गीतारूपी पवित्र जल में स्नान करवाता हूँ।''

– थोरो

''गीता ईश्वरों के भी ईश्वर परम महेश्वर का दिव्य संगीत है। कोई मनुष्य किसी भी धर्म को माननेवाला हो, उसे इस ग्रंथ से प्रगाढ़ ईश्वरीय भाव मिले बिना नहीं रह सकता।''

- जॉर्ज सिडनी अरंडेल

''गीता केवल हिन्दुओं की ही नहीं अपितु संसार की सभी जातियों की धर्मपुस्तक है। प्रत्येक मनुष्य को चाहिए कि वह इस अमर ग्रंथ को ध्यानपूर्वक एवं पक्षपातरहित होकर पढ़े, चाहे वह किसी धर्म को और किसी धर्मगुरु को मानता हो।''

– श्री कैखुशरू जे. दस्तूर

''जगद्गुरु श्रीकृष्ण ने 'भगवद्गीता' के रूप में जगत को अनुपम देन दी है।''

– ईसाई धर्मोपदेशक रेवरंड आर्थर